विश्वात्मक प्रार्थना

प्रेमळा दयाघना तुला सहस्रवंदना।
सर्वव्यापी ईश तू, सच्चिदानंद तू
सर्व शक्तीमान तू, सर्व जाणताही तू॥
वास हा तुझा असे, सर्व भूतांतरी
दुज्या मनास जाणण्या, समर्थ मन्मना करी॥
लोभ, क्रोध, गर्व हे शिवोत न मना कधी
द्वेषभावना नको, आमुच्या मनामधी॥
भेदभाव विसरू दे, बुद्धी / भक्ती तूच दे
मोहबंधनातुनी, मनास पार होऊ दे॥
अनेकरूपी तुझ्या, तुला सदैव सेवु दे॥
तुझेच नाम ईश्वरा, आम्हास नित्य गाऊ दे
कीर्तनामध्ये तुझ्या, आम्हा सदैव रंगु दे॥
प्रेमळा दयाघना तुला सहस्रवंदना॥

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा वृत्तांत

- मार्च महिन्याचा सत्संग २२ मार्च रोजी डॉ. राव यांचे घरी सपन्न झाला.
- दरमहाप्रमाणे 'दिव्य जीवन पत्रिके'चा मार्च अंक परिवारातील सर्व सदस्यांना वितरित करण्यात आला.
- मार्च महिन्यापासून श्री मूर्ती यांनी दररोज एक आध्यात्मिक विचार ई-मेल द्वारे पाठविण्यास सुरुवात केली आहे.
- शाखेचे सदस्य श्री. एस. के. केळकर यांनी रु. ५० देणगी रुपाने शाखेला पाठविले.

❀ पुणे शाखेचा पत्ता ❀

श्री. गो. आ. नगरकर
'स्वानंद' एस्. २०
सहजीवन सोसायटी
पर्वती, पुणे ४११००९
☎ ९३७०५७०२०६

श्री. नितीन देशपांडे
'ईशावास्य'
प्लॉट नं. ४९ /सायंतारा,
डी. एस. के. विश्व
धायरी, पुणे ४११०४१
☎ ०९८५०९३१४१७
०९८५०८२६९९०

पुस्त डाक

प्रति

दिव्य जीवन

(दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा)

स्वामी शिवानंद सरस्वती (ज्ञानयज्ञ म्हणून वितरित) स्वामी चिदानंद सरस्वती

वर्ष १० । अंक ४

एप्रिल २०१५

दिव्यता आपका वास्तविक स्वरूप

'दिव्यता' एक 'संकेत-शब्द' है। मनुष्य की भगवान् के विषय में क्या अवधारणा है ? वह दया का सागर है। इसलिए ज्ञान और ध्यान को सफल बनाने वाली एक साधना है : दयालु बनना, करुणामय होना, क्षमाशील, उदार होना, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना, भला बनना और भलाई करना। अपने मानवीय स्तर पर रह कर कार्य नर करें, प्रत्युत अपनी दिव्यता के स्तर से कार्यशील हों; क्योंकि आपका मानवीय व्यक्तित्व तो केवल कुछ ही देर के लिए है, अस्थाई है।

आपकी दिव्यता ही आपका वास्तविक है। इसी को जाग्रत होने दें। वह सब-कुछ, जो ईश्वरीय है, जो सुन्दर है, उदात्त है और दिव्य है, उसका स्वयं को केन्द्रीय तत्त्व बनायें। अन्य सबके सुख-दुःख में अपना सुख-दुःख अनुभव करें। सहानुभूतिशील बनें। किसी पर दुःख आने पर तत्काल करुणा के देवता बन कर कार्यरत हो जायें। करुणा, शान्ति और आनन्द प्रसारित करने वाले उपकरण बन जायें। अपने जीवन में, अपने जीवन के द्वारा ईश्वरीय प्रेम, दया, करुणा और सहानुभूति प्रसारित करने का माध्यम बन कर रहें।

- स्वामी चिदानन्द

नव वर्ष संदेश

नये वर्ष का यह शुभ अवसर आपको यह याद दिलाने के लिए है कि आप सोचें कि एक और वर्ष बीत गया है और आपने अभी भी जीवन का लक्ष्य नहीं पहचाना है, कि आप अभी भी द्वन्द्वों के बन्धन में जकड़े हुए हैं; आसक्तियों, इच्छाओं, अपूर्णताओं और दुःखों के बन्धनों में फँसे हुए है। अतः नया वर्ष आपको पुनः नये सिरे से, आन्तरिक, मूल और आध्यात्मिक चाह-अपने उस असीम और वास्तविक जीवन-स्रोत-परमात्मा की ओर, उस एकमात्र वास्तविक सत्य की ओर बढ़ने की इच्छा जागृत करने की शपथ लेने का सुअवसर है।

मानव-चेतना के समस्त पहलू जैसे काम-वासना, वंश-परम्परा, सन्तानोत्पत्ति, बौद्धिकता और पद की शक्ति इत्यादि व्यक्ती के उस 'वास्तविक स्वरूप' के प्रतिनिधि नहीं हैं, जो कि वह वास्तव में है। ये सब पहलू तो उन तत्त्वों पर निर्भर करते हैं, जो स्थायी नहीं हैं। ये सब तो समय और स्थान के परिवर्तन से परिवर्तित हो जाते हैं। जब व्यक्ति अपने विचार, जीवन-शैली, जीवन के प्रति अपना दर्शन अथवा दृष्टिकोण बदल लेता है, तब भी ये सब बदल जाते हैं। व्यक्ति बड़ी सरलता से यह समझ सकता है कि परिवर्तित होती हुई अन्तर्बाधाओं की परतों में, आदतों में, प्रवृत्तियों में और रुचियों में बदलाव आ जाता है। किन्तु आत्म-चैतन्य, भले ही कितना भी सुप्तावस्था में क्यों न हो, किसी के द्वारा भी हिलाया अथवा बदला नहीं जा सकता, क्योंकि यह व्यक्ति का अन्तर्निहित वास्तविक स्वरूप है।

इस भीतरी चैतन्य स्वरूप को अभिव्यक्त करना ही आध्यात्मिक जीवन का सार है। यही प्रत्येक मानव के जीवन का लक्ष्य है। जीवन का उद्देश्य है - जो - कुछ भी नकारात्मकता और बुराई मनुष्य के व्यक्तितव में है, उस सबको निकालना तथा अपने में सब उदात्त, भला, मंगलमय एवं शुभ विकसित करना। यह आत्म-अनुशासन और सही जीवन जीने से होता है।

चारित्रिक ईमानदारी और नैतिक परिपूर्णता, ये दोनों, सभी आध्यात्मिक प्रयासों का मूल आधार हैं। भले बनो, भला करो, दयालु बनो, पवित्र बनो, सहानुभूतिशील बनो, सहनशील बनो, सेवा करो, प्रेम करो, दानशील बनो, शुद्ध रहो, अन्तर्निरीक्षण करो, मनन करो, ध्यान करो और ब्रह्म-साक्षात्कार करो, यह सब धार्मिक उपदशों का सार है।

सत्यता, पवित्रता, उदात्तता, निःस्वार्थ प्रेम, धैर्यशीलता, विनम्रतो; काम, क्रोध और लोभ का अभाव, भ्रातृभावना, आत्म-त्याग, एकता, मन की एकाग्रता और इन्द्रियों का संयम इत्यादि सब सकारात्मक गुणों का विकास मिल कर आध्यात्मिक जीवन के विभिन्न नियम बनाते हैं। आसक्ति, अहंकार, अभिमान तथा समस्त सांसारिक इच्छाओं का त्याग, ये सब आत्म-साक्षात्कार के लिए आधारभूत आवश्यकताएँ हैं।

हे सुधन्य निज आत्म-स्वरूप ! नव-वर्ष के शुभ अवसर पर अत्यन्त निष्कपटता से सच्चाईपूर्वक एवं धैर्य सहित निरन्तर आध्यात्मिक जीवन जीने के संकल्प को एक बार पुनः नये सिरे से लें। आपको भी अपनी गलतियों और दोषों का सुधार, किसी प्रकार की लज्जा अथवा अपराधबोध के भार से दब कर नहीं करना चाहिए; बल्कि

अपने-आपका, नैतिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास करने की सच्ची इच्छा के साथ करना चाहिए, ताकि आप मानसिक संघर्षो, दुःखों तथा कष्टों से अब और अधिक समय तक उत्पीड़ित न रहो, बल्कि सुखपूर्ण अनुभूतियों और आध्यात्मिक परिपूर्णताओं का एक नवीन अनुदर्शन कर सको !

सर्वत्र सुख, शान्ति और सम्पन्नता हो ! सब सुखी हों !!

परमात्मा की कृपा सब पर हो !

- स्वामी शिवानंद सरस्वती

New Arrival

'Commentary on the Bhagvad Gita'
(Swami Krishnananda)

This book has commentary on all the eighteen Chapters of Srimad Bhagvad Gita, based on fifty one illuminating discourses alongwith an appendix of Lord Sri Krishan by Swami Krishnanda. Swamiji's in depth explanation of the meaning of the slokas in his unique style makes it a precious widsom - treasure.

Hards Bound
Price : Rs. 460
Pages : 616